

अंदर पढ़ें

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की लेखनी से

- निज का साधन करने की आवश्यकता
- मनमुखी (स्वेच्छाचारी) चाल और हित और अहित बोध

अतीत के झरोखे से

- स्वार्थ त्याग और दान
- सच्ची [illegible]रिता
- [illegible]

साथी सेवकों के संबंध में व्रत (21, 22, 23 जुलाई) पर विशेष

- हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र - 3 (श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी)
- सेवा केंद्र में क्या करता हूँ?
- नव समाज में स्त्री सेविकाएं क्या कहती हैं?
- मोती - साथी सेवकों के लिए (i) [illegible] (ii) कबीर जी का दोहा

बच्चों का कॉर्नर

- भगवान देवात्मा के जीवन से -1
- एक बंदर और [illegible] की कहानी (भगवान देवात्मा द्वारा बाल बालिकाओं
- के लिए [illegible] पुस्तक 'पाठ बोध' से)
- मज़ेदार बूझो तो जानें (पहेलियां)
- ज़रा हंस लो खिलखिलाकर (चुटकुले)

पृष्ठ 2 का शेष

संपादकीय

पुन: प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जीवन की घटनाएं, उनके द्वारा लिखित और प्रकाशित शिक्षाप्रद कथाएँ तथा इनके अतिरिक्त बच्चों के मनोरंजन और ज्ञान वर्धन हेतु चुटकुले और पहेलियाँ भी दी जा रही हैं। इन्हें पढ़कर न केवल बच्चे, अपितु बड़े भी आनंद के साथ साथ लाभ भी उठा सकेंगे, ऐसी हमें आशा एवं हमारी कामना है।

धर्म जीवन के पाठको के लिए परम पूजनीय भगवान् के देव प्रभाव पाने हेतु उनकी इस पृथ्वी पर वर्तमानता में छपे हुए लेख भी समय समय पर धर्म जीवन में सम्मिलित किये जायेंगे। पाठकों के पढ़ने में सुविधा बढ़ाने के लिए अक्षरों का साईज़ बड़ा किया जा रहा है। धन्यवाद।

- - - -

पृष्ठ 6 का शेष

धर्मगत वीरता

अधोगति हो रही है। प्रथम तो ऐसे जन ही दुर्लभ है कि जो विशुद्ध पर हित के भाव से परिचालित होकर अपने जीवन को किसी उत्तम कार्य में अर्पण करें, और फिर ऐसे जन तो और भी थोड़े मिलते हैं कि जो किसी उत्तम कार्य में नाना विघ्नों और रोकों के आने पर भी उसी कार्य में लगे रहें और इस भाव का तो अभी प्राय: पूर्ण रूप से ही अभाव है कि जो उत्तम कार्य किसी एक महापुरूष ने आरम्भ किया हो, उसे उसके पीछे उसी प्रकार से चलाने के लिये और कितने ही जन अपने आपको अर्पण करें, और उसके जीते जी भी यथोचित रूप से अपनी पूरी सामर्थ्य के अनुसार उसकी सहायता करें। इसीलिये हमारे देश में कितने ही जातीय हित के कार्य एक-2 उसी जन के साथ समाप्त हो जाते हैं, कि जो उसे आरम्भ करता है। और हमारी जाति उस हित से वंचित रह जाती है कि जो उस कार्य के होते रहने से उसे प्राप्त हो सकता था। आह! हमारी ऐसी दुर्दशा कब निवारण होगी?

- - - -

पृष्ठ 14 का शेष

सेवक होकर मैं क्या करता हूं?

पुण्य अग्नि को प्रज्वलित न किया होता, और फिर उस उद्धारकर्ता के द्वारा जीवन प्राप्त उन्हें और कितने ही सेवकों ने अपनी-2 तुच्छ शक्तियों को उसी अग्नि में आहुतियां न दी होतीं, और उस पापमोचनी अग्नि को अपनी ऐसी आहुतियों के द्वारा और प्रबल न किया होता, तो वह सारे फल कहां से और क्योंकर उत्पन्न होते, और हो सकते! दुनिया में सैकड़ों धर्म मत और धर्म सम्प्रदाय हैं, उनके बड़े-2 मन्दिर और बड़ी-2 पुस्तकें हैं, बड़े-2 धनी उन के पुजारी और प्रीस्ट हैं, परंतु सारी पृथिवी पर कहीं भी कोई ऐसा मनुष्य दल नहीं दिखाई देता कि जिसमें सब के सब जन और तो और उन दस मोटे-2 पापों से भी विरता हों, कि जिन से देवसमाज का प्रत्येक सेवक विरत पाया जाता है!! तब देवसमाज का यह सारा कार्य कितना महान! और कितना अद्वितीय! इस कार्य की महानता को उपलब्ध करो, इस कार्य की श्रेष्ठता को सम्मुख लाओ, और फिर एक बार प्रश्न करो **"देव समाज के लिये मैं क्या करता हूं"**?

- - - -

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 7

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

जुलाई – 2021
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सम्पादकीय

किसी महान हस्ती के गुणों को देखकर उनको पहचानना और अपने आप को उन गुणों के विचार से सत्य के आधार पर नीचा और घटिया देखना ही श्रद्धा भाव कहलाता है। हम साधाारण इंसानों के लिए महान हस्तियों के विषय में ऐसा विचार करना तो बहुत दूर की बात है, हम तो अपने माता पिता, भाई बहिनों, अध्यापकों, अपने साथ या अपने ऊपर या नीचे काम करने वालों, अर्थात किसी को भी लीजिये, उन्हें उनके गुणों को सही रूप में देखने में ही असमर्थ हैं। कम से कम मैं तो अपने विषय में इस सच्चाई को स्वीकार करने में कोई झिझक अनुभव नहीं करता। हमारे इर्द गिर्द कितने ही लोग हैं जिनके सुन्दर गुण हमें नजर ही नहीं आते। कारण? परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की देव ज्योति में इसका स्पष्ट उत्तर भी मिल जाता है, वह है हमारा अहं अनुराग।

परम पूजनीय भगवान् की अनुपम शिक्षा के अनुसार श्रद्धा भाव ही वह माध्यम है जिसके सहारे हम अपने अन्दर सद्गुण विकसित करके ऊंची से उंची मंज़िलों का सफर तय कर सकते हैं। इसी विचार से कि मुझमें और मेरे साथी धर्म जीवन के पाठको के जीवन में श्रद्धा भाव की [i] बढौतरी हो, धर्म जीवन के पिछले अंक से यह लेखमाला "हमारी श्रद्धा के पात्र" आरम्भ की गयी है। इस प्रकार प्रत्येक महीने हमें परम पूजनीय भगवान् के देव प्रभावों के आश्चर्यजनक करिश्मे देखने, प्रेरणा देने और अनुकरण करने के लिए मिलेंगे।

पिछले अंक से ही हम परम पूजनीय भगवान् देवात्मा द्वारा निर्धारित हमारे विश्वगत 16 संबंधों में हर महीने में आने वाले जो पाठ और विचार के दिन नियत किये गए हैं, उनके विषय में उपयुक्त लेख और यथासंभव गीत भी देने का प्रयास कर रहे हैं ताकि अपने जीवन की भाग दौड़ में हम उन्हें भुला न बैठें।

इस धर्म जीवन के प्रथम सम्पादक विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान प्रेम बल जी खेड़ा ने उस समय धर्म जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग हमारी भावी पीढ़ी के लिए CHILDREN'S CORNER (बच्चों का कॉर्नर) के नाम से रखा था, जो किसी कारणवश उनके देहांत के बाद छापना बंद हो गया था। इस अंक के साथ उसे भी हमारे बच्चों के लिए

शेष पृष्ठ 2 पर

श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी की लेखनी से

निज का साधन करने की आवश्यकता

देवधर्म जीवन का धर्म है। जीवन धर्मगत हितअभिलाषा के उत्पन्न होने के बिना लाभ नहीं होता। जीवन संबन्धी हित अभिलाषा के उत्पन्न होने पर ही कोई ऐसे साधन जानना और पूरे करना चाहता है कि जिन से जीवन का हित हो। साधन के बिना जीवन उन्नत नहीं होता। इस लिये प्रत्येक जीवनाकांक्षी के लिये साधनशील होना आवश्यक है।

जो सेवक अथवा श्रद्धालु जन कर्मचारियों के साधनों में योग देने के अनंतर फिर आप कोई अभ्यास नहीं करते अथवा उनके शिक्षक जन उन्हें जो साधन बताते हैं, वह बिल्कुल वा भली भांति पूरा नहीं करते, वह धर्म जीवन लाभ नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में वह नीचे की गति की ओर ही जाते हैं, और अपनी धर्म जीवन लाभ विषयक योग्यता को (यदि वह कुछ भी उनमें वर्तमान हो) धीरे-2 खोते जाते हैं। इसीलिये जो जन हमारी संगत में आकर और अनेक साधनों में योग देकर भी अपनी उन्नति के लिये आप साधन करना आरम्भ नहीं करते, और जो कुछ उनके शिक्षक जन उनकी भलाई के लिये उन्हें बताते है, उसे पूरा नहीं करते, वह उपरोक्त नियम के अनुसार जहां अपने जीवन की बहुत बड़ी हानि करते हैं, वहां कर्मचारियों के अति श्रेष्ट और मूल्यवान परिश्रम को भी निष्फल करते हैं।

मनमुखी (स्वेच्छाचारी) चाल और हित और अहित बोध

जब तक किसी मनुष्य के भीतर आत्मा सम्बन्धी हित ओर अहित का सर्वोच्च और कल्याणकारी बोध जागृत नहीं होता, तब तक वह अपनी सब क्रियाओं में केवल अपनी नाना वासनाओं और उत्तेजनाओं आदि की तृप्ति को हि मुख्य रखता है। उनकी तृप्ति के साथ 2 यदि कोई आत्मा सम्बन्धी हित उसे प्राप्त हो जाएं, तो हो, परन्तु उन्हें छोड़कर वह हित लाभ करना नहीं चाहता। ऐसी अवस्था में वह वहीं तक अपने हित के लिये यत्न करता और करना चाहता है, और वहीं तक अपने किसी हितकारी को हितकारी देखता और अनुभव करता है, जहां तक उसे अपनी मनमुखी चाल से इधर उधर न जाना पड़े, परन्तु जहां उसे अपनी मनमुखी चाल छोड़नी पड़े, वहीं वह अपने हित को नहीं चाहता और उसके लाभ के लिये कोई संग्राम भी नहीं करता। और यदि उसके ऐसे किसी हित के लिये उसका कोई हितकारी उसे कुछ कहे वा समझाए, तो वह भी उसे बुरा लगता है, और अनेक बार वह अपने ऐसे हितकारी को भी जो वर्षों तक उसका हित करता रहा हो और जिसको वह आप भी सैकड़ों बार हितकारी अनुभव करता रहा हो, उलटे रूप से देखने और उसमें दोष निकालने लगता है और अपने हितकर्ता से फटकर नाना प्रकार की हानियां और क्लेश लाभ करता है। नीचे से एक ऐसे सेवक के पत्र से कुछ अंग उद्धृत करके लिखता हूं, कि

जो सौभाग्य अवस्था से जीवन दाता की ज्योति में अपनी ऐसी कृपापात्र अवस्था को प्रकृत रूप से देख कर दु:खी हो रहा है और उस अवस्था में निकलना चाहता है। वह अंग यह है: -

"अब मैं श्री भगवान देवात्मा जी की ज्योति को पाकर देखता हूं, कि जो कुछ मैं अपने ओर दूसरों के लिये करता हूं, वह केवल अपनी मनमुखपी चाल के अनुसार करता हूं। मैं साफ देखता हूं कि मैं जो चिन्ता करता हूं, जो क्रिया करता हूं, और दूसरों के सम्बन्ध में जो सद् व्यवहार करता हूं, वह सब अपनी रूचि को लेकर करता हूं, और समझता यह रहता हूं, कि मैं ऐसा करके बड़ों की आज्ञा पालन करता हूं, परन्तु सच यह है, कि बड़ों की आज्ञा जहां तक मेरी इच्छा के अनुसार होती है, उसे खुशी से पालन करता हूं, और जहां वह मेरी इच्छा के विरूद्ध हो, उसे पालन करने में दु:ख अनुभव करता हूं, और ऐसी अवस्था में अनेक बार अपने ऐसे हितकारियों को यह देखकर भी कि वह सदा मेरा हित चाहते और हित करते रहे हैं, उलटे रूप में देखने लगता हूं, उनके दोष निकालने लगता हूं। अपनत्व के चक्र में हृदय अन्धकार से इतना भर जाता है, कि अपना दु:ख तो अनुभव होता है, परन्तु दूसरे की ओर निगाह ही नहीं आती। भीतर गहरा अन्धेरा छा जाता है। इस समय अपनी ऐसी कृपा पात्र अवस्था को सामने लाकर दु:ख और शोक से भर रहा हूं और देखता हूं कि मैं अभी अपने सुख और दु:ख के चक्र में फंसा हुआ हूं, और अपने प्रकृत हित और अहित को नहीं देखता। ऐसी अवस्था रखकर मैं उच्च गति की ओर कदापि नहीं जा सकता। ऐसी महा भयानक अवस्था से निकलने के लिए मैं प्रतिज्ञा करता हूं। ऐसा हो, कि मैं इस प्रतिज्ञा को पालन करने के लिये संग्राम कर सकूं।"

पाठकगण! तुम अपनी परीक्षा करके देखो, कि अभी तक तुम किस अवस्था में हो?

-देवत्व सिंह

अतीत के झरोखे से

(120 वर्ष पहले 'जीवन पथ' में छपे कुछ लेख)

स्वार्थ त्याग और दान

मानचैस्टर (इंग्लैंड) में एक मांसभक्षण वर्जिनी सभा है। मांस खाने के विरूद्ध प्रचार करना इसका कार्य है। थोड़े दिन हुए इस सभा के मंत्री को पता मिला कि किसी नगर की एक वृद्ध स्त्री मरते समय अपनी यह इच्छा प्रकाश कर गई है, कि उसकी सारी सम्पत्ति कि जो चार सौ पौंड की है, उपरोक्त सभा को दान में दे दी जावे। इस सभा के कर्मचारियों ने इस भद्र स्त्री का पहले कभी नाम तक भी नहीं सुना था। इस दान से सभा के कार्य ने बहुत पुष्टता लाभ की है। जो जीते जी किसी शुभ काम की उन्नति चाहता हो, वह अपने मरने के अनन्तर भी उसकी उन्नति चाहता है, और इसीलिये जो जिस काम की धन से सहाय कर सकता है, उसके लिये धन से, जो पुस्तकों के द्वारा कर सकता है, उसके लिये पुस्तकों से, और जो किसी और प्रकार से कर सकता है, उसके लिये किसी और प्रकार से, उसके लिए अपने शरीर के त्याग के अनन्तर भी सहाय करना स्वाभाविक है।

अभी जर्मनी के एक धनी अध्यापक ने 23,600 पौण्ड एक ऐसे अनाथालय के बनाने के लिये दान में दिये है कि जिसमें वहां के रहने वालों को मांस वा मांस की बनी हुई कोई वस्तु भोजन के लिये न दी जायेगी। उनके इस बड़े दान से एक ओर जहां कितने हि निराश्रय जनों को आश्रय और सहारा प्राप्त होगा, वहां दूसरी ओर मांस भक्षण के विरूद्ध कार्य को भी बहुत सहायता मिलेगी और कितने ही जन मांसाहार की पाप मूलक क्रिया से बच जायेंगे। इन अध्यापक महाशय का यह दान बहुत ही प्रशंसनीय है और मांसाहार निवारण सम्बन्धी शुभ कार्य के साथ उनकी सच्ची लगन का बहुत अच्छा दृष्टान्त है। स्वार्थ-त्याग और शुभानुराग और सद्कार्य साधन के बिना धर्म जीवन लाभ नहीं होता।

सच्ची सहकार्यता

यूरोप के सर्व साधारण लोगों में से अनेक जनों में यह उच्च भाव उत्पन्न हो चुका है, कि जिस हितकर कार्य से वह उपकृत हुए हों, अथवा जिस कार्य को वह उत्तम और श्रेष्ट अनुभव करते हों, वह उसकी दिल खोलकर सहायता करते हैं। वह लोग हमारे अधिकांश देशवासियों की न्याईं एक 2 हितकर कार्य से अनेक प्रकार का हित पाकर भी उस कार्य की उन्नति के लिये यत्न करने की ओर से विमुख और उदासीन नहीं रहते। हां उनमें से कितने ही जनों को इस विषय में कुछ कहने, वा उपदेश देने की भी आवश्यकता नहीं होती, किन्तु वह आप ही ऐसे कार्य की बहुत उत्तम रीति से सहायता करते है। और अनेक बार ऐसी सहायता करके अपना नाम तक भी किसी पर प्रगट नहीं करते। निसन्देह किसी श्रेष्ट कार्य में सच्ची और पवित्र सहकार्यता इसी का नाम है। और ऐसी सहकार्यता के प्राप्त होने पर हि कोई उत्तम कार्य यथेष्ठ उन्नति और बल लाभ कर सकता है।

धर्मगत वीरता

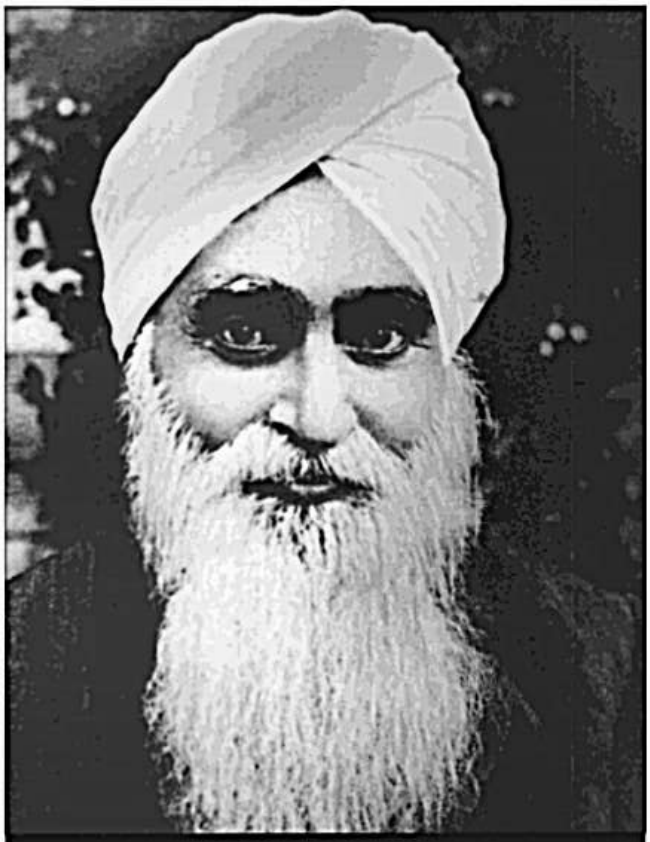
धन, धरती आदि के लिये सिर कटवाना सहज है, क्योंकि उनकी वासना बहुतों के भीतर बहुत प्रबल होती है। परन्तु धर्मगत वीरता और है, और वह केवल ऐसे लोगों में पाई जाती है, कि जो एक वा दूसरे प्रकार के पाप के दूर करने और किसी शुभ कार्य की जय के लिये संग्राम करते हैं, और ऐसे उच्च संग्राम में सौ सौ कठिनाइयों और विपदों के आने पर भी कमी पीठ नहीं दिखाते। उन का मंत्र यह होता है, कि जिस शुभ अनुराग से उन्होंने किसी शुभ और श्रेष्ट कार्य को हाथ में लिया है उसकी जय के लिये वह अपना और सब कुछ दे देंगे, परन्तु किसी और डर वा लालच से शुभ को त्याग करके भीरू और नीच नहीं बनेंगे।

ऐसी उच्च वीरता और उच्च कार्य के लिये आत्म त्याग का भाव ही एक 2 समाज अथवा जाति को उच्च और श्रेष्ठ बनाता है, और ऐसे आत्म-त्यागी लोग ही जिस कार्य को हाथ में लेते है, उसमें वह कृत-कार्य होते है। इसी उत्तम भाव ने यूरोप की कितनी ही जातियों को इतना बलवान बना दिया है। और इसी के अभाव से हमारी जाति की इतनी

शेष पृष्ठ 2 पर

हमारी विशेष श्रद्धा के पात्र– 2
(श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी)

देव समाज के एकमात्र व्रती कर्मचारी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में एक अमूल्य भजन रचा था **"हमने तुम को नहीं पहचाना, नहीं पहचाना, नहीं पहचाना"**। इस भजन में जो सच्चाई छिपी हुई है उसकी गहराइयों तक जाना हम साधारण मनुष्यात्माओं के लिए असंभव सी बात है। मैंने भी परम पूजनीय भगवान् द्वारा घड़े हुए एक ऐसे ही व्यक्तित्व के लगभग बीस वर्ष की आयु तक कम से कम बीस बार तो दर्शन किये ही हैं। मुझे बचपन से हर महोत्सव पर श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के दर्शन करने तथा उनकी सभाएं सुनने का सौभाग्य प्राप्त रहा। क्या मैंने उन्हें पहचाना? नहीं, कदापि नहीं। यही मेरा भी दुर्भाग्य रहा है।



श्रद्धेय श्रीमान् ईश्वर सिंह जी
(1883–1967 ई०)

जिन्होंने भगवान के लिए उपयुक्त इस शेयर को सुना है और समझा है कि *"अजब नहीं अकसीर तुम्हारी - ख़ाक हो चाहे ज़र कर दे; फ़र्श ज़मीं से हमें उठाकर - अर्श पे जलवागर कर दे।"*

श्रीमान् जी के संबंध में इस शेयर का हिन्दी अनुवाद:
हे भगवन! आपके देव प्रभाव मिट्टी को भी सोना बनाने की क्षमता रखते है। किसी अति तुच्छ जन को भी ज़मीन से उठाकर आकाश जितनी उंचाई पर शोभायमान कर सकते हैं।"
तो वे श्रीमान जी के जीवन में आये आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन और उनके द्वारा निष्काम सेवा के अनोखे दृष्टांत को जानकार स्तब्ध ही रह जायेंगे। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी भगवान् के एक अटूट सेवाकारी, भक्त, विश्वासपात्र कर्मचारी हो गुज़रे हैं। हाल में उनका जीवन चरित्र "आध्यात्मिक जगत का चाँद" शीर्षक से प्रकाशित

ज़रा विचार कीजिये कि श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के एक मौसा जी महाराजा पटियाला, दूसरे, महाराजा नाभा, तीसरे महाराजा फरीदकोट थे और इनके परिवार के महाराजा बोडिया, महाराजा लाडवा से निकटी सम्बन्ध थे। ऐसे परिवारों में, जैसे कि आशा हो सकती है, शिकार करना, मांस भक्षण, शराबों की भट्टियाँ चढ़ना, उस जमाने में परिवार में किसी कन्या के जन्म लेने पर उसे मौत के घाट उतार देना एक साधारण सी बात थी। इन सब बुराइयों से बुरी तरह लथपथ इनके पिता श्रीमान सरदार हरनाम सिंह जी को श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के द्वारा परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभाव लाभ करने का महा सौभाग्य मिल गया। फिर क्या था? सारे परिवार की, और एक सीमा तक हम सब की, काया कल्प हो गई क्योंकि श्रीमान जी ने देव समाज को एक लम्बे काल तक जीवित रखा और हम में से अनेक को उस सुनहरी वातावरण में सांस लेने का अवसर मिल गया।

श्रीमान जी के जीवन के जिन जिन विशेष गुणों ने मेरे दिल पर अपने गहरे प्रभाव डाले, वे निम्नलिखित हैं:

पवित्रता का अति सुन्दर सद्गुण

श्रीमान जी ने अपनी श्रद्धेय माता जी के विषय में लिखा है:

"आपके पवित्र जीवन और आपकी इस हिदायत ने कि मैं गाँव की कुंवारी लड़कियों और नौजवान स्त्रियों को अपनी बहनों के रूप में देखूं, उनका सम्मान करूं और उनके सामने आँख न उठाऊँ- मेरा जो भला किया है, उसको मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता और धन्यवाद देता तृप्त नहीं होता। इस अंग में विश्वासपात्र होने की आपने मेरे जीवन में बुनियाद डाल दी।"

श्रीमान जी दसवीं कक्षा में कुछ महीने देव समाज हाई स्कूल मोगा में तथा उसके बाद फोरमैन क्रिश्चन कॉलेज लाहौर में बी. ए. की पढ़ाई के समय में देव आश्रम लाहौर में परम पूजनीय भगवान् के श्री चरणों के निकट रहकर उनके अति विलक्षण देव प्रभाव पाते रहे और इस प्रकार पवित्रता के अति सुन्दर भाव को अनुराग रूप में विकसित करने के योग्य हो गए जो कि हम इंसानों में सहज नहीं मिलता। मनुष्य जगत में बहुत विरले ही ऐसी योग्यता को प्राप्त कर पाते हैं। किसी भी मनुष्यामा के लिए पवित्र होना एक अत्यंत वांछनीय सौभाग्य है। 18 जून 1948 के 'सत्य देव संवाद' पत्र में एक लेख में श्रद्धेय श्रीमान जी लिखते हैं:

"मेरे परम पूजनीय भगवान् और कितने ही धर्म सम्बन्धियों की सहायता से सैंकड़ों और हज़ारों ब्रह्मचारियों से कहीं ज्यादा अच्छी जिन्दगी मैंने गुजारी है। मुझे लड़कियों और स्त्रियों में काम करने का अवसर मिला है, मगर मैंने उन्हें **हमेशा ही** अच्छी निगाह से देखा है और उनके लिए पवित्र भावों से सेवा करने का भी अवसर पाया है। यह सब मुझ तुच्छ पर परम पूजनीय भगवान् और धर्म सम्बन्धियों की कृपा का फल है, वरना मैं जवानी के नाजुक समय में ऐसा कभी न कर सकता था।..... नौजवानी का आलम हो, सेहत हो, शिक्षा हो, जायदाद हो, शादी के लिए हर किस्म की सुविधाएं हों, बड़े बड़े घरों से शादी की दरखास्तें आती हों, फिर भी शादी से बचे रहना और परोपकार के कार्य में अपने आप को लगाए रखना और नौजवान लड़कियों और स्त्रियों की सेवा के योग्य

बनना, भगवान् देवात्मा की शक्ति का ही काम है। उन्हीं की शक्ति की ही करामात है।" उनकी पवित्रता की मूर्ति को सम्मुख लाकर अधिकारी जन बहुत प्रेरणा लाभ कर सकते है और भगवान् से अपना सम्बन्ध जोड़कर स्वयं भी पवित्र बन सकते हैं।

श्रद्धा तथा कृतज्ञता भावों का क्या उच्च स्तर था जो श्रीमान जी ने अपने जीवन से प्रदर्शित किया? बिना गहरी श्रद्धा और कृतज्ञता के गहरे भाव के किसी भी व्यक्ति के जीवन से निम्नलिखित आश्चर्यजनक घटनाएं उत्पन्न हो ही नहीं सकतीं।

श्रद्धेय श्रीमान जी ने 27 मार्च 1908 से 12 सितम्बर 1916 तक लगभग साढ़े आठ वर्ष पूजनीय भगवान् के श्री चरणों में व्यतीत करने का सौभाग्य पाया और उसे गजब दर्जे में सफल किया। इस सुनहरी समय का अति सुन्दर वर्णन उनकी पुस्तक "भगवान् देवात्मा के चरणों में रहने के दिनों की याद" में उपलब्ध है, जिसे पाठकगण अवश्य पढ़कर लाभ उठाना चाहेंगे। उस काल में श्रीमान जी ने भगवान् के देव प्रभावों को जिस अधिक मात्रा में प्राप्त किया और अपने जीवन से जो अत्यंत विस्मयजनक दृष्टांत प्रस्तुत किये, उन्हें पढ़कर और महसूस करके मुझे तो अपना आप अत्यंत तुच्छ और घटिया अनुभव होता है। यहाँ स्थान के अभाव के कारण मैं इस विषय में केवल दो ही उदाहरण दे पाऊंगा।

अद्वितीय गुरू के लिए अनोखी श्रद्धा, कृतज्ञता, सेवा, विश्वास और आकर्षण का अनोखा उदाहरण

आरम्भ में पर्वत आश्रम सोलन में केवल वर्षा ऋतु में ही पानी मिलता था। पीने का पानी भी बाहर दूर शहर से लाना पड़ता था। पानी की कमी के कारण वर्षा के शेष समय पीने के पानी की भी बहुत कठिन समस्या रहती थी। श्रद्धेय श्रीमान जी बहुत खुशी खुशी शहर के नलके से हाथ की रेहड़ी पर पानी का टब भर कर लाया करते थे और ऐसा करने में अपने सौभाग्य की कोई सीमा नहीं अनुभव करते थे। इतने ऊंचे खानदान के व्यक्ति होने के बावजूद उन्हें ऐसी सेवा करने में कोई शर्म महसूस होना बहुत दूर की बात थी। यही तो था उनके भीतर श्रद्धा भाव की सुन्दरता का लुभावना दृश्य।

भगवान की प्रसन्नता को मुख्य रखकर पौधों की सेवा का अनोखा दृष्टांत।

पानी न होने के कारण पर्वत आश्रम में पौधे पानी की कमी से पनपने नहीं पाते थे तथा कोई फूल पैदा नहीं होते थे। शहर से लाया गया पानी पीने और नहाने के लिए ही पर्याप्त था। परम पूजनीय भगवान् को उद्भिद जगत से अद्भुत् प्यार था, इसलिए वे पौधों की इस दुर्दशा से बहुत परेशान थे। एक बार प्रात: सैर से वापिस आते समय उन्होंने बहुत दुखी दिल के साथ इस विषय में अपनी अत्यंत गहरी व्यथा का प्रकाश किया। श्रीमान जी के शब्दों में: "मेरा दिल भर आया। मेरे भगवान् ऐसी दिक्कत का प्रकाश करें और हम उनके उपकृत सेवक उसके दूर करने के लिए कुछ न करें।"

यह शब्द और इसके बाद की घटना श्रद्धेय श्रीमान जी के भगवान् के प्रति अथाह श्रद्धा भाव को दर्शाती हैं जो हमें बहुत प्रेरणा दे सकती हैं। श्रीमान जी ने हाथ जोड़कर भरे दिल से बेनती की: "भगवान हम अवश्य कुछ न कुछ करेंगे।" फिर क्या था? कहावत है न, कि 'जहां चाह वहां राह'। श्रीमान जी के अति सुन्दर श्रद्धा भाव ने छलांगें लगानी शुरू कर दीं। यहाँ यह बता देना उचित है कि देव समाज के इतिहास में एक बहुत ही विशेष

सेवाकारी और शानदार हस्ती हो गुजरी हैं, वे हैं बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान पंडित संत राम जी। ऊन्होंने परम पूजनीय भगवान् की और माता पूजनीया श्रीमती देवकी देवी जी अग्निहोत्री की और बाद में भगवान् के निवास स्थान पर्वत आश्रम सोलन की उच्च दर्जे की निजी सेवा करने का बहुत अनुकरणीय दृष्टांत प्रस्तुत किया है जिसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। मेरे व्यक्तिगत रूप से बहुत बड़े सौभाग्य हैं कि हमारे समस्त परिवार ने इन दोनों ही ऐसी महान हस्तियों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। उनका पवित्र और भोला भाला सा चेहरा आज भी मेरे सम्मुख आकर मुझे उनके आगे भी झुका रहा है। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने पंडित संत राम जी से मिलकर एक असाधारण योजना बनाई। पर्वत आश्रम से लगभग 2 किलोमीटर तीखी निचाई पर पानी का एक चश्मा है जिसे खड्ड कहते हैं। हम लोग भी बचपन में पानी की किल्लत के कारण सोलन सत्संग के दौरान वहां नहाने के लिए जाया करते थे। इस खड्ड की उतराई और चढ़ाई बहुत तीखी है और हम जैसे नौजवानों को भी बहुत थका देने वाली होती थी। श्रद्धा के इन दोनों दीवानों की बात देखिये। दोनों ने फैसला किया कि सुबह दो बजे उठकर अँधेरे अँधेरे नीचे खड्ड से मशकों में पानी भरकर लाया जाए। पूरा दिन सख्त मेहनत के बाद अपनी नींद "जो हम सभी को बहुत प्यारी होती है" वर्षों तक यह सेवा करना उनके अति सुन्दर आत्मिक रूप के आगे झुका देने वाली एक असाधारण घटना है। 19 दिसंबर 1980 के 'सत्य देव संवाद' में श्रद्धेय श्रीमान जी लिखते हैं, **"हम सुबह दो बजे खुशी खुशी चाव भाव से उठते और चार बजे तक पानी लाते रहते। तीन चार टब पानी के भर लेते जिनको सुबह देखकर भगवान् अपनी बहुत खुशी का प्रकाश करते। इस तरह हम वर्षा शुरू होने से पहले दो बजे से चार बजे से पहले मशकों के द्वारा पानी लाते, जिससे हमें एक ओर भगवान् की प्रसन्नता प्राप्त होती और रूहानी रस मिलता वहां दूसरी ओर मेरा शरीर भी इस सारे संग्राम में से गुज़रकर मजबूत होता गया। क्या गजब के दिन थे वह?"**

मैं स्वयं तो सचमुच श्रीमान जी के श्रद्धा तथा कृतज्ञता भाव से किए गए इस त्याग को सम्मुख लाकर शर्म से भर जाता हूँ और ऐसी कामना करता हूँ कि मुझे भी जितना संभव हो भगवान् का बल मिले और मैं भी अपनी तुच्छ योग्यता अनुसार अपने अन्दर कुछ न कुछ श्रद्धा भाव विकसित कर सकूं जिसके बिना मेरी आत्मिक मौत तो निश्चय है।

इस उपरोक्त अति विशेष घटना को जानकर या पढ़कर, क्या हमारे दिल में यह प्रश्न पैदा नहीं होता कि हम अपने जीवन से कभी ऐसी शानदार घटना को क्रियान्वित कर सकें या कर सकते हैं? मेरा तो उत्तर यही है कि नहीं, किसी तरह से नहीं, क्योंकि मैं अपने भीतर अभी तक वैसी उच्च स्तर की श्रद्धा का भाव एक अंश भर भी पैदा नहीं कर पाया। काश! मुझे भगवान् की अत्यधिक सहायता प्राप्त हो सके।

गुरू सेवा का एक और अनोखा दृष्टांत जो हमें आंसू बहाने के लिए मजबूर कर देता है और हमारे हृदय के भावों को उनके सम्मुख बहुत तुच्छ प्रमाणित कर देने वाला है

श्रद्धेय श्रीमान जी इस घटना का वर्णन उपरोक्त लेख में इस प्रकार करते हैं (जिन शब्दों ने तो मेरा दिल ही मोह लिया):

"एक दो साल के बाद महसूस होने लगा कि भगवान् के लिए यदि सैर पर जाने का प्रबंध हो सके तो बहुत अच्छा हो।"

ऐसा सुन्दर विचार आना था तो फिर क्या हुआ? श्रीमान जी ने एक पुरानी रिक्शा खरीदी और उसे मुरम्मत करवा कर नया रूप दे दिया। उसे खींचने के लिए कुछेक मज़दूरों का प्रबंध भी कर दिया। श्रीमान जी के भीतर के उच्च दर्जे के श्रद्धा व् कृतज्ञता भाव ने कुछ ही दिनों में उन्हें यह अनुभव करवाया कि भगवान् की रिक्शा खींचने के लिए एक तो मजदूर लोग साफ सुथरे नहीं होते, दूसरे वे समय पर नहीं पहुँचते। तीसरे भगवान् की परम पवित्र हस्ती को मजदूरों के हवाले करने में भी श्रीमान जी को बहुत बड़ा खतरा महसूस हुआ। उनके श्रद्धावान और कृतज्ञ आत्मा ने उन्हें यह सोचने के लिए मजबूर किया कि **"क्यों न मैं ही रिक्शा खींच कर भगवान् को सैर के लिए लेकर जाऊं? ऐसा करने में मेरे कितने बड़े सौभाग्य होंगे?"** उन्होंने कई वर्ष तक ऐसा ही किया। श्रीमान संत राम जी उनकी इस सेवा के काम में सदा सहायक होते रहे। भगवान् नहीं चाहते थे कि वे रिक्शा खींचने का काम करें, परन्तु, **"भक्त के वश में होते आये भगवान्"** की कहावत के अनुसार उनके बार बार निवेदन करने पर कि ऐसा करने में उनके शरीर और आत्मा दोनों का ही बहुत हित होगा, उन्हें अंततः ऐसी परम हितकर सेवा का अवसर मिल ही गया। सचमुच ही इस सेवा ने श्रीमान् जी के स्वास्थ्य और आत्मा को कहीं का कहीं पहुँचा दिया। वे लिखते हैं:

"दौड़े दौड़े चार पांच मील या कई बार इससे भी अधिक दूर रिक्शा ले जाने और लाने में जो खुशी मिलती थी वो महसूस की जा सकती है, बयान नहीं हो सकती। अन्दर से पसीना और वर्षा होने पर बाहर से तर बतर हो जाते थे और दिल तो उच्च भावों के उच्च रस से और भी तर बतर रहता था। याद नहीं मुझे इन दिनों ऐसा काम करते हुए नज़ला या ज़ुकाम या दर्द या कोई शारीरिक बीमारी की शिकायत हुई हो। इसमें रत्ती भर भी शक नहीं कि इस उच्च सेवा से मेरे शरीर ने सेहत और ताकत दोनों प्राप्त किये। यह सेवा करते हुए मेरे दिल की अजीब हालत होती थी। मेरी आँखों से आंसू जारी हो जाते थे। मैं दौड़ता जाता था और अपने परम उपकारी सतगुरू की महान महिमा और उपकार स्मरण भी भजनों के एक या दूसरे पद को गुनगुनाते हुए करता रहता था।..... यह सेवा करके जिस कदर भूख लगा करती और जो जान जिस्म और दिल में आती महसूस होती थी, उस का मैं चाह कर भी बयान नहीं कर सकता..... भगवान् के किसी जगह बैठ जाने पर उनकी मीठी मीठी अति हितकर देववाणी सुनाने से जो आनंद प्राप्त होता था, उसकी तो बस अब याद ही बाकी रह गई है। वह अति मुबारिक दिन तो अब वापिस नहीं आ सकते। दिल खुशी से बल्लियों उछला करता था। सब काम भाग भाग कर हो जाते थे। हाँ, अगर उछलने और भागने दौड़ने, हर वक्त चुस्त रहने, खुश रहकर काम करने का ज़माना कभी आया तो सच्चे अर्थों में तब ही आया। हां, कोई ज़माना मुझ आलसी और आराम तलब और अक्सर उदास रहने

वाले वजूद को काम का और खुशदिल वजूद बना गया तो वही मुबारिक ज़माना था। वाह! अपने लिए अपने अत्यंत मुबारिक ज़माने में भगवान् के जीवन की श्रद्धा और कृतज्ञता से यात्रा करने और उनकी विशेष मेहरबानियों और संग्रामों से मैंने किस किस नीच सुख अनुराग से निकलने या उसे दमन करने और किस किस उच्च भाव को अपने भीतर पैदा करने और किस किस अंग में मनुष्य आत्मा के बारे में निराले सत्य ज्ञान को पाने का महा सौभाग्य प्राप्त किया, उसे मैं कुछ महसूस ही कर सकता हूँ, बयान कदापि नहीं कर सकता। उनके श्री चरणों में रहते हुए नीच क्रियाएं तो क्या होनी थीं... बहुत बार तो ऐसा महसूस होता था कि नीच चिंताओं से भी आज़ादी मिल गई है। अपने अन्दर अपने और दूसरों के सच्चे भले के लिए अत्यंत जोरदार रौ चलती हुई अनुभव करके अजीब रस से भरा रहता था। अपने भीतर इस उच्च परिवर्तन को अनुभव करता था कि कोई बड़े से बड़ा त्याग नहीं कि जो मैं नहीं कर सकता और कोई भी त्याग इस त्याग की तुलना में कुछ भी हकीकत नहीं रखता। मेरी अवस्था तो एक ऐसे जन की तरह थी जो लासानी दाता के दर पर सुबह से शाम तक मजदूरी तो चार आने की करता था परन्तु शाम को लासानी मेहरबान के दर से हज़ारों और लाखों की कीमत के हीरे जवाहरात मिल जाते थे। अपने अन्दर अपने देवात्मा सतगुरू के देव प्रभावों से अति आश्चर्यजनक परिवर्तन को अनुभव करके उनको धन्यवाद देता हूँ और नाचने लग जाता हूँ। सौभाग्य से यह सच्चाई अत्यंत ज़ोरदार तौर पर हमेशा मेरे सामने रही कि मैं तो मैली, गन्दी और स्वार्थ से भरी हुई चिंताओं और क्रियाओं का ही पुतला था। मेरे भीतर ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन, मुझ मुर्दा के अन्दर जान संचार करने वाले मेरे सच्चे मोक्ष दाता और विकास कर्ता सतगुरु की विशेष कृपाओं का ही फल है।"

मोगा में देव समाज बीएज हाई स्कूल के बच्चों की 25 वर्ष तक निरंतर निष्काम सेवा जो किसी भी मान की सेवा को बिलकुल फीका बना दे।

श्रद्धेय श्रीमान जी ने भगवान् से प्राप्त जिन उच्च भावों से भरकर बच्चों की सेवा की, उस स्तर को किसी के लिए भी छूना असंभव सा प्रतीत होता है। क्या चमत्कार हुए उनके शिष्यों और अधीन अध्यापकों के जीवनों में। उस वृत्तांत की तो पाठकों को "आध्यात्मिक जगत का चाँद" नामक पुस्तक में से कुछ झलक ही मिल पाएगी जिसे शीघ्र ही प्रकाशित किया जाएगा। उन्होंने बेहद बिगड़े हुए बच्चों के भीतर भगवान के देव-प्रभावों को संचार करके उन्हें गाँव गाँव जाकर भगवान् की महिमा फैलाने और लोगों से पाप छुड़वाने का ऐसा शानदार काम किया जो काम हमारे युग के अच्छे-अच्छे कर्मचारियों के बस की बात नहीं थी। मुझे भी 14 वर्ष तक अम्बाला शहर में देव समाज गर्ल्ज हाई स्कूल में वही अवसर प्राप्त हुआ परन्तु मेरा काम उनके पहाड़ जैसे काम के मुकाबले में केवल चींटी मात्र ही रहा। कारण? वे लगातार भगवान के देव प्रभाव पाकर भगवान के मिशन का कार्य करते रहे और मैं ऐसा नहीं कर सका। यही है अंतर पूजनीय भगवान् के देव प्रभावों के अधीन जीवन बिताने और न बिताने का।

- डाक्टर विनोद खेड़ा

सेवक होकर मैं क्या करता हूं?

देव समाज के भीतर श्री भगवान देवात्मा जी की अनुपम उधारनी शक्ति काम कर रही है, और उसके द्वारा प्रत्येक सेवक ने अपने जीवन में अधिक वा न्यून रूप से उच्च परिवर्तन लाभ किया है। प्रत्येक सेवक पहले की अपेक्षा अवश्य उच्च हो गया है। इस दृश्य को विचारपूर्वक सम्मुख लाकर जहां श्री भगवान देवात्मा जी के कार्य की महानता को सम्मुख लाना चाहिये, वहां फिर देव समाज के इस अद्वितीय कार्य को देख कर अपने भीतर यह प्रश्न करना चाहिये कि इस महान कार्य की पुष्टि देने, और उसे उन्नत करने के लिये **"मैं क्या करता हूं?"** मेरी कौन सी शक्ति, मेरा कौन सा धन वा पदार्थ इस महोच्च कार्य में काम आ रहा है? समय था, जब कि यह सारे जन इसी पृथ्वी में वास करते थे, एक वा दूसरे मत वा सम्प्रदाय को मानते थे, चतुर वा विद्वान कहलाते थे, परन्तु उनकी गति नीच गति थी। उनके जीवन विनष्ट हो रहे थे। और अपनी बारी में वह औरों का विनाश कर रहे थे। और यदि श्री भगवान देवात्मा जी की पाप विनाशिनी और उधारनी शक्ति उन के हृदय तक पहुंचकर उन को न हिलाती, और उन्हें उन की नीच अवस्था से न लिकालती, तो वह आज पता नहीं कहां और किस अवस्था में होते। और किन-2 नीच कर्मों, और दुष्कामनाओं में लगकर अपना और औरों का विनाश कर रहे होते। यह सारा परिवर्तन जो उनमें आ गया यह सब कहां से, और क्यों कर? यदि उस उद्धारकर्ता शक्तिवान धर्मावतार ने अपने आप को इस महा कार्य के लिये भेंट न धरा होता, और वर्षों तक घोर से घोर संग्रामों में पड़ कर और दिन रात के कठिन परिश्रमों से, और अपना रक्त बहाकर,

शेष पृष्ठ 2 पर

गीत-साथी सेवकों के लिए

भूल न जाना साथियो, सत्गुरु की कुर्बानियां।
फिरते थे मारे दर बदर, अब पड़ गए सही राह पर,
कभी सोचते हो साथियो, किस की हैं मेहरबानियां। 1

जिसने जगत हित के लिए, बदनामियों के दुख सहे,
सुख स्वाद सेहत छोड़ कर, भेंट धरी जवानियां। 2

यकता मिशन घोषण किया, अति कठिन व्रत धारण किया,
और सत्य धर्म खोज कर, मिथ्या की तोड़ी तानियां। 3

जब पाप पर हमले किए, पापी आपके दुश्मन बन गए,
और छिड़ गया बेमिसल[1] युद्ध, है जिसकी अजब कहानियां। 4

हर कदम पर कठिनाई थी, घृणा की बदली छाई थी,
थी गालियों की इक झड़ी, अपयश की तुग़यानियां[2]। 5

घर बार अपना छोड़ कर, खूने जिगर निचोड़ कर,
कर मिन्टगुमरी हिजरतें[3], जा गर्मियां गुज़रानियां। 6

थे रोग शय्या पर पड़े, मुश्किल था होंगे उठ खड़े,
कहती थी मेहलक[4] मर्ज़ की, यह सब की सब निशानियां। 7

थी मौत जब मण्डला रही, हुई न निराशा इक घड़ी,
पढ़ देख लो उस वक्त की, देवात्मा की बाणियां। 8

यह तप हुआ उनका सफल, दिए सैंकड़ें हृदय बदल,
हैरान है इन्सानियत, देख उनकी कामरानियां[5]। 9

किस लिए यह तप संग्राम थे, यह हमरे सम्मुख आ सके,
और कर सकें महसूस हम, बेकदरियों की हानियां। 10

है वक्त हम पहचान लें, और अपने मन में ठान लें,
लग जाएं उनके मिशन में, यह तुच्छ ज़िन्दगानियां। 11

1 अद्वितीय 2 तूफान 3 यात्रा 4 मृत्युदायक 5 रोग 6 चमत्कार

देव समाज में स्त्री सेविकाएं क्या कहती हैं?

भगवान् देवात्मा के एक गांव में पधारने पर वहां की स्त्रियों को विशेष करके जो लाभ हुआ, उसके विषय में वहां की एक सेवका लिखती है: -

हे जीवन दाता! मैं अपने ऊपर और इस गांव और चौधरी जी के परिवार पर आप की अत्यन्त कृपा को देख-2 कर आपके प्रति गहरी कृतज्ञता के भाव से भर जाती हूं, और आपको बारम्बार धन्य धन्य कहती हुई तृप्त नहीं होती। आप ने इस शुष्क और रेतीले प्रदेश में आकर और नाना प्रकार के कष्ट उठाकर, हमारे नीच गृह को पवित्र किया। आपकी इस अपार कृपा के द्वारा कितने ही पुरूषों और स्त्रियों का बहुत हित साधन हुआ है विशेषत: स्त्रियों ने, कि जिन्हें आप की इस कृपा के द्वारा ही आपके दर्शन हो गये, बहुत ही हित लाभ किया है। वह आप के पवित्र दर्शन और शुभ आशीर्वाद का मूल्यवान अधिकार पाकर स्वभावत: आपके चरणों में झुक गईं। और आपके जीवन दायक वचनों को श्रवण करके धन्य 2 हो गईं। अब उनकी गति में कितना ही फर्क आ गया है। पहले जब हमारे घर की स्त्रियां मिलकर बैठा करती थीं तो केवल हमारे घर के काम धन्धों की वा इधर उध र की ही बातें हुआ करती थीं अब आपके पवित्र विषय में भी बातचीत करती हैं, जिससे उनका बहुत भला होता है। और उस समय वह बहुत दीन भाव से भर जाती हैं।..... की माता..... ..... जी ने विशेष करके अच्छे प्रभाव लाभ किये हैं। मेरी छोटी सास पढ़ने लग गई हैं और..... तक पढ़ भी चुकी हैं। मैं अपना दैनिक साधन रोज़ पूरा करती हूं। दिन में कुछ पर सेवा का काम करती हूं, कि जो सीने का काम होता है। चिड़ियों को चोगा और पानी देती हूं। प्रतिदिन कुछ न कुछ पढ़ती हूं, और अपनी सामर्थ्य के अनुसार घर का काम काज करती हूं।"

एक और स्थान से एक सेविका लिखती हैं: -

"आपके श्रीचरणों में आने से पहले मैं घोर अन्धकार में जीवन व्यतीत करती थी। मुझे अपने आप की कोई सुध न थी, और अन्धों की न्याईं न केवल आप ठोकरें खाती थी, किन्तु अपनी दु:खदाई गति से औरों को भी बहुत दु:ख देती थी। और इतनी अन्धी और बेसुध थी कि औरों को महा दु:ख पहुंचा कर भी ऐसा कभी अनुभव न करती थी, कि मैंने किसी को दु:ख पहुंचाया है। मैं कभी अपनी भावजा के साथ मिलकर नहीं बैठती थी, और कभी उससे प्रीति पूर्वक बातें नहीं करती थी, हां दंगा और विवाद और कलाह तो कई बार किया था। अब हे भगवन आपने मेरी जो गति बदल दी है, उसके लिये आप को कहां तक धन्य-2 कहूं। गत रात को जब मैं और मेरी भावजा मिलकर भजन गा रही थीं, और आप की महिमा को सम्मुख लाने का यत्न कर रही थीं, तो जिस प्रकार से मेरे भीतर आप के प्रति कृतज्ञता का भाव उत्पन्न हुआ उसे मैं वर्णन नहीं कर सकती. . . . . आप की कृपा से मुझ नीच का जितना हित साध न हुआ है, मैं उसे न तो पूरा-2 देख सकती हूं, और न वर्णन ही कर सकती हूं। हम स्त्रियों में न विद्या का नाम था और न धर्म का! इस पाप भरे संसार में आप जिस प्रकार से हम दीन अनाथों का ही हित साधन रहे हैं उसे सम्मुख लाकर

बारम्बार हृदय आप के श्री चरणों में झुक जाता है"

एक स्त्री कर्मचारी लिखती हैं।

"आज कल 14 स्त्रियां मेरे पास पढ़ने आती हैं और तीसरे दिन साधन में भी शामिल होती हैं. . . . . कल मैनें सब स्त्रियों को लेकर साधन कराया था। उस से "मनमुखी आत्मा की क्या दुर्गति होती है," इस विषय में एक उपदेश का पाठ किया था। उसे श्रवण कर के सब ने ही बहुत उच्च प्रभाव लाभ किये थे। . . . . . देवी, ...कर और . . . . . .देवी ने मनमुखी चाल को छोड़ने के विषय में मंगल कामनायें कीं। . . . . . .और . . . . . .में कुछ अलमेल रहता था। उस समय सब सित्रियों के बीच में और बिना किसी के कुछ कहने के . . . . . .जी ने रो-2 कर . . . . से क्षमा चाही, और फिर सब स्त्रियों को प्रणाम किया। उस समय ऐसे दृश्य को देखकर आप की संजीवनी और पतित पावन शक्ति के लिये बारम्बार धन्यवाद का भाव उत्पन्न होता था और हृदय आप के श्री चरणों में झुक जाता था। आप की शक्ति के बिना कहां सम्भव है, कि एक-2 स्त्री अपने अपराध को मान कर दूसरे से क्षमा प्रार्थना करें। उसी समय श्रीमान . . . . . जी की पत्नी ने बहुत दु:खी होकर कहा कि मैं आप के पीछे अपने पति के साथ लड़ पड़ी थी अब मैं यह साधन लेती हूं कि मैं अब उनके पांव धोया करूंगी। इससे मेरे भीतर और भी आपके प्रति धन्यवाद का भाव उत्पन्न हुआ। जीवन दाता आप धन्य हैं, जो हम अबलाओं पर इतनी बड़ी दया करके हमारा अपूर्व हित साध न कर रहे हैं"।

एक और सेविका लिखती है :-

"हे जीवन दाता! आप के महा हितों और उपकारों को सामने लाकर भक्ति भाव से आपके श्री चरणों में आशीर्वाद प्रार्थना करती हूं।

हे हित स्रोत! मैं आप को धन्य-2 कहे बिना क्योंकर रहूं। आपकी ज्योति एक-2 समय मेरे अन्धें और कृतघ्न हृदय तक आपके योग्य शिष्यों के द्वारा पहुंचकर उसको जब कुछ ज्योतिर्म्मान करती है, तो आपके परम हितों का दृश्य मेरे सामने आ जाता है। और मुझे आप के श्री चरणों में ही गिरकर गहरे धन्यवाद का प्रकाश करने और आप उन भावों से अधिक से अधिक भरने के योग्य करता है। मेरा अस्तित्त्व आप के महा हितों का दान है। मैं कही चली जाऊं, किसी स्थान में रहूं, कैसे हि मनुष्यों के अन्तर मेरा वास हो, दिल के विचार से मैं कैसी ही कृतघ्न रहूं, परन्तु आप के महा हित ऐसे प्रबला हैं, कि वह जरूर मेरी आँखों के सामने आये बिना नहीं रह सकते। जैसे एक बच्चा चाहे वह कहीं रहे, किसी अवस्था में रहे, जाने वा न जाने, तो भी जिन माता पिता के द्वारा उसका अस्तित्त्व बना है, वह उसका अस्तित्त्व ही उन के उपकारों का ऐसा प्रतिरूप है, कि जो जब तक है, मानो तब तक उनके अस्तित्त्व को प्रकाश करेगा। वैसे ही आपके हित और महा उपकार मेरे हृदय और मन में तो एक ओर, मेरे शरीर, और मेरी बातचीत, और मेरी रहन सहन में साफ दिखाई देते हैं, यदि आपकी विशेष कृपा मुझ पर न होती तो मेरा शरीर भी महा क्लेशों और दु:खों का घर होता। यदि आपकी मुझ पर कृपा न होती, यदि आप मुझ से क्लेशित होकर भी मुझे अपने श्री चरणों में स्थान न दिये रखते, तो यह शरीर भी जो भी इस समय केवल अपने हि सुख और स्वाद को ले कर जीता हैं, और आप जो इन कुल सुखों के दाता हैं उन को भी

भूला रहता है, वह सुख और स्वाद भी न होते। मैं कहां होती, किसके घर होती, आठ-2 आंसू रोती होती, बाहर से दु:खी, भीतर से दु:खी, क्या मालूम जीती भी होती, या न होती। यह मेरे शरीर पर ही इतने उपकार कोई कम उपकार न थे, परन्तु इसके भिन्न, और इससे चढ़बढ़कर मेरे भावों और बुद्धि शक्ति ने वैसा ही कार्य किया है। यद्यपि मैं अपनी निम्न अवस्था के कारण आपको अपने ऊपर जितना अधिकार देना चाहिये था न दे सकी, परन्तु आप की अति बलवान और तेजमयी, हितकारिणी और परोपकारिणी शक्ति ने अपना कार्य करके मुझे कई प्रकार का हित पहुंचाया है, और दुर्बल और नीच होने पर भी मैं देखती हूं, कि मेरे भीतर क्या भावों के विचार से क्या चिन्ता के विचार से और क्या इच्छाओं के विचार से जो कुछ भीतर आता है, वह मेरी अवस्था के अनुसार निराला होता है। इसलिये मैं अपने सारे अस्तित्त्व को देखने के साथ ही आपकी कृपा के हाथ को एक स्थान में नहीं, कई स्थानों में स्पष्ट रूप से अनुभव करती हूं और ऐसे दृश्य के मेरे सम्मुख आने से हि मेरा हृदय स्वभावत: आप की इस हितकर छवि के सामने झुकने और झुककर आप को हृदय की गहरी तह से धन्य-2 कहने के बिना नहीं रह सकता। शोक है तो इतना कि मैं नीच आपके ऐसे उपकारों और हितों को अपने जीवन में सफल न कर सकी। जिस से भी साफ़ प्रगट होता है, कि मेरी नीच अवस्था तक पहुंचने और उसे कुछ परिवर्तित करने में आपको किस प्रकार के दु:खों और क्लेशों और नाना प्रकार के कष्टों के अन्तर से गुज़रना पड़ा है, कि जिन को मैं अपने सम्मुख भी पूरे प्रमाण में नहीं ला सकती। हाय, यह निकम्मा जीवन किसी कार्य में भी नहीं आता! आप की कृपा से आज कल विशेष रूप से मेरे अन्तर अपने जीवन को सफल बनाने और किसी प्रकार अपने नीच सुखों से निकलने का भाव उठ रहा है। मैं यह विश्वास करती हूं, कि आपकी जिस महान शक्ति ने मुझको अब तक कुछ न कुछ, मेरे अति नीच होने पर भी, सहायता की है, वह आगे भी मुझ को सहारा देकर मेरे और आन्तिरक बन्धन भी काटेगी और इस नीच आत्मा के जीवन को सफल करेगी, काश कि मैं अपने बाकी के जीवन को तो बचा कर किसी अर्थ लगा सकूं और आप का शुभ आशीर्वाद पा सकूं"

कबीर जी का दोहा

सेवक

सेवक सेवा में रहे;
सेवक कहिये सोय;
कहें कबीर सेवा बिना;
सेवक कमी न होय। १

फल कारण सेवा करे,
तजे न मन से काम;
कहें कबीर सेवक नहीं;
चहे चौगुना दाम। २

बच्चों का कॉर्नर

भगवान देवात्मा के जीवन से–1

हमारी पृथ्वी को बचाओ

पिछले कुछ वर्षो से हमारे संसार में एक विशेष प्रकार की जागृति पैदा हुई है - वह है पृथ्वी को, अर्थात पृथ्वी के संसाधनों को बचाने के विषय में सोचविचार और कार्य। इस संदर्भ में आज से लगभग 110 वर्ष पहले की भगवान देव आत्मा के जीवन की एक घटना सर्मण हो आती है। जिसे पढ़कर या सुनकर एक एक कर्मचारी, सेवक या श्रदालु ने अपने जीवन में पर्यावरण की रक्षा करने का प्रयास किया है। इस घटना को सौभा पूर्वक पढ़ने के पश्चात ऐसी आशा कि जाती है कि पाठक अपनी बारी में पानी या बिजली आदि प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यवहार नहीं करेंगें।

30 दिसम्बर सन् 1910 ई० का दिन था। भगवान् देवात्मा लाहौर के ''चिड़िया घर'' में से गुज़र रहे थे, तब उन्होंनें देखा, कि किसी जन ने अपनी ज़रूरत के लिए वहां के पानी का एक नल खोल दिया है, परन्तु उसने उसे बन्द नहीं किया, और उस का पानी वृथा वहा जा रहा है। उन्हें उस जल के इस अपव्यवहार से आघात् पहुंचा और उन्होंनें उसे खुद जा कर बन्द कर दिया - यद्यपि ऐसा करते समय उन के कोट की कुछ आस्तीन भी भीग गई।

मज़ेदार बूझो तो जानें

एक परीक्षा में एक विद्यार्थी के 0 अंक आए। यह सोचकर वह बहुत परेशान हो गया कि उसने प्रश्न पत्र में आए प्रश्नों के उत्तर तो बिलकुल सही दिए थे, फिर ऐसा क्यों हुआ? आइये प्रश्न पात्र में आए प्रश्न और उस विद्यार्थी के उत्तर ध्यान से देखें और स्वयं निर्णय करें कि उसके उत्तर सही थे या नहीं।

प्र०1 किस युद्ध में टीपू सुल्तान मारे गये?

प्र०2 स्वतंत्रता के घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कहां हुए हैं?

प्र०3 तलाक के लिए मुख्य कारण क्या है?

प्र०4 नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म कब हुआ था?

प्र०5 पत्ता नहीं हूं, पर हरा हूं। बंदर नहीं हूं, पर नकल करता हूं, तो पूछो मेरा नाम?

उ०1 अपनी आखिरी लड़ाई में।

उ०2 पृष्ठ के निचले भाग में

उ०3 शादी

उ०4 उनके जन्मदिन पर

उ०5 तोता (parrot)

ज़रा हँस लो खिल खिलाकर

- आजकल बेटियां भी बेटों से कम नहीं। मजाल है घर का कोई काम कर लें।।
- मेरी मां ने आज डिजिटल सज़ा दी: "चार्जर ही उठा के ले गई।"
- अब तो घर वाले भी सुबह जल्दी नहीं उठाते। वो भी जानते हैं: "बिस्तर से उठा दिया तो मोबाइल में घुस जाएगा।"
- एक पागल आईने में खुद को देख कर सोचने लगा... मित्र, इसको कहीं देखा है। काफी देर टैंशन में सोचते-सोचते बोला.... धत्त तेरी की, मैंने इसे पहचान लिया यह तो वही है जो उस दिन मेरे साथ-बाल कटवा रहा था।

एक बन्दर और दो बिल्लियों की कहानी



किसी घर में दो बिल्लियां रहती थीं। एक दिन उस घर की स्त्री ने कुछ मीठी रोटियां पकाई। दोनों बिल्लियां चुपचाप घात में बैठी रहीं और अवसर पाकर एक मीठी रोटी उठाकर ले भागीं। रोटी के बांटने में दोनों का झगड़ा हो गया। एक ने दूसरी से कहा कि तेरा टुकड़ा बड़ा है। दूसरी ने पहली से कहा कि नहीं मेरा टुकड़ा छोटा है, और तेरा टुकड़ा बड़ा है। इस झगड़े को निबटाने के लिए वे दोनों एक बन्दर के पास गई।

बन्दर मुन्सिफ (जज) बनकर बैठा, और एक तराज़ू में दोनों के टुकड़े डाल कर तोलने लगा। डण्डी उठाने से पता लगा, कि उनमें से एक टुकड़ा बड़ा है। बन्दर ने दोनों को समान करने के लिए बड़े टुकड़े में से एक बड़ा भाग तोड़कर आप खा लिया। फिर जब शेष दो टुकड़े

तराज़ू पर रखे, तो उस का एक पलड़ा फिर भारी हो गया। बन्दर ने फिर दोनों को बराबर करने के लिए उनमें से बड़े टुकड़े का एक बड़ा अंश तोड़कर मुंह में डाल लिया। इस पर दोनों बिल्लियां झुंझला कर बोलीं कि "ठहर! ठहर! तू जज बन कर हमारी सारी रोटी चट किए जाता है। ला, हमारी बाक़ी की रोटी दे दे। हमें न्याय कराना स्वीकार नहीं है। हम आपस में अपना फैसला कर लेंगी।"

बन्दर ने कहा, "यह नहीं हो सकता। विचारपति (जज) बनकर मैं अपने मत के अनुसार अवश्य फैसला करूंगा। तुम्हें यदि आपस का फैसला पसन्द था, तो मेरी अदालत में आने की क्या आवश्यकता थी?" इतना कह कर बन्दर ने बड़े टुकड़े में से एक और टुकड़ा तोड़ कर खा लिया, और अब दो बहुत छोटे - छोटे टुकड़े शेष रह गए। बिल्लियों का रहा सहा दिल भी निकल गया और उन्होंनें घबरा कर कहा, "हम से यह बहुत बड़ी भूल हुई है, कि हम अपने झगड़े को तुम्हारी कचहरी में निबटाने के लिए ले आई। अब यह बाकी के दोनों टुकड़े हमें दे दो। आगे के लिए हम अपना झगड़ा आपस में ही निबटा लिया करेंगी और किसी कचहरी में नहीं ले जायेंगी।"

बन्दर उनकी यह बात सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़ा और कहने लगा, "वाह! तुम दोनों तो बहुत बुद्धिमत्ती हो। क्या तुम्हें इतना भी ज्ञान नहीं, कि विचारालय में कोई झगड़ा बिना खर्च करने के नहीं निबटता? मैं अब ये बाकी के दोनों टुकड़े अपनी फीस समझ कर खा लेता हूं।" बन्दर ने यह कहते ही दोनों छोटे - छोटे टुकड़े भी मुंह में डाल लिए। बिल्लियां उसका मुंह देखती रह गई।

उपदेश:

जहां तक सम्भव हो, किसी झगड़े को किसी कचहरी में ले जाने के स्थान में, आपस में ही सुलझा लेना अधिक अच्छा है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें:- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ GLOBAL

Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh

Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

Published on 5th of the mont

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

शोक समाचार

देव समाज के माननीय सेवक श्रीमान् विनोद कुमार जी डोगरा 87 वर्ष की आयु में धर्मशाला (ज़िला कांगड़ा) हि0 प्र0 में 16 जून 2021 को परलोक गमन कर गए। वे काफी समय से बीमार चल रहे थे। उदारचित्त, सदा मुस्कुराने वाले, प्रत्येक जरूरतमंद के लिए मददगार, अपने स्वार्थ से ऊपर होकर सारे परिवार को जोड़कर रखने वाले, स्वास्थ्य की अवस्था में सदैव महोत्सव में शामिल होने वाले, परम पूजनीय भगवान के ऐसे वचनबद्ध सेवक के प्रति हम श्रद्धा भाव समर्पित करते हैं और परलोक में उनके आत्मा की शांति और विकास की कामना करते है।

चन्द दिन पहले डा० नवनीत अरोड़ा

श्रद्धेय पिता जी सम्मान के योग्य श्रीमान् जवाहर लाल जी का अति दुखदायी निधन हो गया। वह आख़िरी दिनों में बहुत दुखद अवस्था में से गुज़रे। उनका बड़ा लम्बा देव समाज से सम्पर्क रहा है। वह कई पक्षों में अच्छे दिल से मालिक थे। मैं ही उनको नौकरी से हटवाकर तथा उनका बिस्तर उठाकर विकासालय में लाया था। उनके पिता जी वा पारिवारिक जनों को बहुत आघात् लगा था। लेकिन फिर भी समाज के काम के लिए अडिग रहे।

उनकी धर्म पत्नी जी श्रीमति सुन्दरी जी, उनके सपुत्र डा० नवनीत अरोड़ा जी और उनकी पोतियों के लिए हम संवेदना का प्रकाश करते हैं और एक बार फिर से दिली दुख का प्रकाश करते हैं।

बलदेव सिंह,
मंत्री, देव समाज ग्लोबल

श्रीमान् बलदेव सिंह जी, एम.ए., (लाईफ बर्कर) मंत्री - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिसर और मालिक 'धर्म जीवन' ने Surya Laser Den, Chandigarh से छपवाकर म.नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Post